"सिरावेध"

* **संक्षिप्त परिचय** ⇒ शल्य चिकित्सा में सिरावेध को चिकित्सा का आधा भाग माना जाता है।

"सिराव्यधश्चिकित्सार्धं शल्यतन्त्रे प्रकीर्तितः।(सु॰शा॰ 8/23

* **सिरावेध काल** ⇒ (1) वर्षा ऋतु = व्यभ्रे (जब बादल न हों)
  (2) ग्रीष्म ऋतु = शीतल स्थान में
  (3) हेमन्त ऋतु = मध्यान्ह काल में
  (4) क्षीण, अधिक दोष वाले एवं मूर्च्छा से पीड़ित रोगी में सिरावेध अपराह्न में दूसरे या तीसरे दिन कराना चाहिये।

* **सिरावेध प्रमाण** ⇒ (1) माँसल प्रदेश में - यवमात्र (व्रीहिमुख शस्त्र)
  (2) अस्थिप्रदेश में - अर्धयवमात्र (कुठारिका शस्त्र से)

* **सुविद्ध सिरावेध के लक्षण** ⇒ (1) सिरावेध उपरान्त रक्त का धार रूप में आना।
  (2) एक मुहूर्त पश्चात रक्तस्राव का स्वतः बन्द हो जाना।

* **सिरावेध द्वारा रक्तमोक्षण प्रमाण** ⇒ अधिकतम ① प्रस्थ।

* **सिरावेध में प्रथमतः दृष्टान्त** ⇒ कुसुम्भपुष्प से पीतस्राव सदृश्य।

* **सिरावेध निषिद्ध** ⇒ उपवास, कास, श्वास, शोष, आक्षेपक, प्रवृद्धज्वर, पक्षाघात एवं संशोधन उपरांत

* **सिरावेध के पश्चात परिहार काल** ⇒ ① एक मास तक

Scanned with CamScanner

* दुष्टवेध के प्रकार ⇒ (20)

* रक्तमोक्षणोपरान्त देय आहार ⇒ नाति उष्णशीत, स्निग्ध व ईषत अम्लयुक्त या अम्लरहित।

* विष उपद्रव व आत्यायिक अवस्थाओं में अवेध्यसिरा का भी वेधन किया जा सकता है। (सु०सू० 8/5)

* रक्तस्राव रोकने के उपायों का क्रम ⇒ (1) स्कन्दन (हिम)
⇓
(2) संधान (कषाय)
⇓
(3) पाचन (भस्म)
⇓
(4) दहन (दाह)

(#) रोगानुसार सिरावेध ⇒

रोग	सिरावेध स्थल
(1) पादहर्ष, विसर्प, वातरक्त विचर्चिका व वातकण्टक में	क्षिप्र मर्म से (2) दो अंगुल ऊपर
(2) क्रोष्टुशीर्ष, खंजता व पंगुता	गुल्फ से (4) चार अंगुल ऊपर
(3) अपची में	इन्द्रवस्ति से (2) दो अंगुल नीचे
(4) गृध्रसी	जानु के ऊपर या (4) चार अंगुल नीचे।

Scanned with CamScanner

5) गलगण्ड में	उरुमूल पर
6) प्लीहोदर में	वाम बाहु पर कूर्पर के अन्दर की ओर एवं कनिष्ठिका तथा अनामिका के मध्य।
7) यकृतदाल्योदर व कास, श्वास में	दक्षिणबाहु में।
8) प्रवाहिका में	श्रोणि के चारों ओर।
9) मूत्रवृद्धि में	वृषण के दोनो ओर।
10) बाहुशोष अवबाहुक में	कन्धे के मध्य।
11) अर्न्तविद्रधि व पार्श्वशूल	स्तन व कक्षा के मध्य।
12) तृतीयकज्वर में	त्रिकसन्धि के मध्य।
13) चतुर्थक ज्वर में	स्कन्ध के नीचे।
14) अपस्मार में	हनुसन्धि पर।
15) उन्माद में	केशसीमन्त, ललाट व शंख पर।
16) कर्णशूल व कर्णरोग में	कर्ण के ऊपर चारों ओर।
17) नासा रोग में	नासाग्र पर।
18) तिमिर रोग व अक्षिपाक में	अपांग पर।

Scanned with CamScanner

(#) सिरावेध की विधि ⇒ सर्वप्रथम सिरावेध स्थल का बंधन कर सिराओं को अच्छी प्रकार से उभारकर (उत्पन्नकर) उन्हे नियंत्रित करें। अब व्रीहिमुख या कुठारिका शस्त्र से उभरी हुई सिराओं में (सिराओं के गम्भीर या उत्तान स्थिती के अनुसार), आधे यव प्रमाण में सिरावेध करें। ठीक परिमाण में वेधन करने के लिये शस्त्र का तीक्ष्ण होना तथा शस्त्रकर्म में हस्त कुशलता आवश्यक है। रक्त के अल्पमात्रा में स्त्रवित होने पर सिरामुख में तैल, लवण व नगरादि का चूर्ण प्रयोग कर घर्षण करें। रक्तविस्त्रावण के पश्चात व्रण का शीतल जल से प्रक्षालन करें तत पश्चात सिरा मुख पर तैल का प्लोत रखकर उसे बाँध देना चाहिये।

(#) शरीरगत कुल सिराओं की संख्या ⇒ (700) - आयुर्वेद - मतानुसार

* वेद्य सिराओं की संख्या ⇒ (602)
* अवेद्य सिराओं की संख्या ⇒ (98)

Scanned with CamScanner